

मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन: एक ऐतिहासिक अवलोकन

Freedom Movement in Madhya Pradesh: A Historical Overview

डॉ. प्रतिमा पाण्डेय

जनभागीदारी अतिथि विद्वान, इतिहास विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय रीवा

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन के ऐतिहासिक स्वरूप, विकास-क्रम एवं विविध आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। मध्यप्रदेश – जो सेंट्रल प्रोविंस एवं बरार, मध्य भारत, विन्ध्य प्रदेश तथा भोपाल रियासत के विलय से 1956 में गठित हुआ – भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक की स्वाधीनता यात्रा में इस भूभाग के वीर सेनानियों, जनजातीय क्रांतिकारियों, महिला योद्धाओं एवं सामाजिक संगठनों ने अतुलनीय योगदान दिया। इस शोध पत्र में 1857 के विद्रोह, स्वदेशी आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, जनजातीय विद्रोह, महिला भागीदारी तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास का विस्तृत ऐतिहासिक परीक्षण किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह है कि मध्यप्रदेश का स्वतंत्रता संग्राम केवल एक क्षेत्रीय घटनाक्रम नहीं था, अपितु यह राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का अभिन्न एवं सशक्त अंग था जिसमें समाज के सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता रही।

मुख्य शब्द: मध्यप्रदेश, स्वतंत्रता आन्दोलन, 1857 का विद्रोह, राष्ट्रीय चेतना, जनजातीय संघर्ष, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, महिला भागीदारी।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल दिल्ली, बंबई या कोलकाता जैसे महानगरों तक सीमित नहीं था। यह संग्राम भारत के कोने-कोने में फैला हुआ था और मध्यभारत की भूमि – जो आज मध्यप्रदेश के नाम से जानी जाती है – इस राष्ट्रीय जागरण की धुरी बनी रही। विन्ध्याचल, सतपुड़ा, नर्मदा और चम्बल जैसी प्राकृतिक संरचनाओं ने जहाँ एक ओर इस क्षेत्र को भौगोलिक विविधता दी, वहीं दूसरी ओर यहाँ के निवासियों ने अपनी जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अनवरत संघर्ष किया।

मध्यप्रदेश का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अंतर्गत अस्तित्व में आया। इससे पूर्व यह क्षेत्र सेंट्रल प्रोविंस एवं बरार (ब्रिटिश भारत), मध्य भारत, विन्ध्य प्रदेश और भोपाल रियासत में विभाजित था। इस भू-भाग की स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी का अध्ययन करते समय इन विभिन्न राजनीतिक इकाइयों की परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध यहाँ का संघर्ष बहुआयामी था। एक ओर 1857 की महाक्रांति में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब पेशवा तथा अनेक राजपूत और मराठा सरदारों ने अपने प्राणों की आहुति दी, तो दूसरी ओर जनजातीय समाज ने भी गोंड, भील एवं कोरकू विद्रोहों के माध्यम से ब्रिटिश अधिपत्य को चुनौती दी। बीसवीं शताब्दी में गाँधी जी के नेतृत्व में आरम्भ हुए जन आन्दोलनों में भी मध्यभारत की जनता ने अग्रणी भूमिका निभाई।

इस शोध पत्र में स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न कालखण्डों में मध्यप्रदेश की भूमिका का क्रमबद्ध एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ के प्रमुख क्रांतिकारियों, आन्दोलनों, संगठनों एवं घटनाओं का विस्तृत विवरण भी दिया गया है।

2. शोध पत्र का उद्देश्य (Objectives of the Research Paper)

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं:

प्रथम उद्देश्य: मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन के ऐतिहासिक विकास-क्रम का कालानुक्रमिक अध्ययन करना तथा 1857 से 1947 तक के संघर्ष के प्रमुख पड़ावों की पहचान करना।

द्वितीय उद्देश्य: इस क्षेत्र के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों, क्रांतिकारियों एवं जनजातीय नायकों के अवदान का मूल्यांकन करना तथा उनके संघर्ष को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करना।

तृतीय उद्देश्य: मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक कारकों की भूमिका का परीक्षण करना।

चतुर्थ उद्देश्य: स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं, जनजातीय समुदायों एवं दलित वर्गों की सहभागिता का विशेष अध्ययन करना, जो अक्सर मुख्यधारा के इतिहास-लेखन में उपेक्षित रह जाती है।

पंचम उद्देश्य: मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम की राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ अन्तःक्रिया एवं सम्बंध का विश्लेषण करना तथा यह स्थापित करना कि यह क्षेत्रीय संघर्ष राष्ट्रीय मुक्ति के महाआख्यान का अभिन्न अंग था।

3. शोध पत्र का महत्व (Significance of the Research Paper)

मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन का अध्ययन कई दृष्टिकोणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अकादमिक दृष्टि से यह शोध उस ऐतिहासिक रिक्तता को भरने का प्रयास करता है जो मध्यभारत के संघर्ष के व्यापक और गहन अध्ययन के अभाव में विद्यमान है। अधिकांश मानक इतिहास-ग्रन्थों में बंगाल, पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र के संघर्षों को अपेक्षाकृत अधिक स्थान मिला है, जबकि मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम का उतना व्यापक दस्तावेजीकरण नहीं हुआ।

सामाजिक दृष्टि से यह शोध विशेष महत्व रखता है क्योंकि मध्यप्रदेश की जनजातीय आबादी (जो देश में सर्वाधिक है) ने स्वतंत्रता संघर्ष में अभूतपूर्व बलिदान दिया। शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह जैसे गौड़ शहीदों की वीरगाथा, भील विद्रोह एवं कोल आन्दोलन का अध्ययन जनजातीय इतिहास को उचित सम्मान दिलाने की दृष्टि से अनिवार्य है।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी यह शोध महत्वपूर्ण है। यह प्रमाणित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम केवल एक अभिजात वर्गीय या महानगरीय परिघटना नहीं था, बल्कि इसमें भारत के हर कोने के सामान्य जन, किसान, मजदूर,

महिलाएँ, जनजातीय समुदाय और युवा सम्मिलित थे। यह बोध राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को सुदृढ़ करता है।

शैक्षणिक दृष्टि से यह शोध मध्यप्रदेश के इतिहास पाठ्यक्रम को समृद्ध करने में योगदान देता है तथा भावी पीढ़ियों को अपने पूर्वजों के बलिदान से अवगत कराकर देशभक्ति की भावना जागृत करने में सहायक सिद्ध होता है।

4. मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

4.1 पृष्ठभूमि: उपनिवेशवाद और मध्यभारत

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने धीरे-धीरे मध्यभारत पर अपना वर्चस्व स्थापित करना आरम्भ किया, तब यह क्षेत्र मराठा साम्राज्य, गोंड रियासतों, बुन्देल राजाओं एवं विभिन्न छोटी-छोटी रियासतों में विभाजित था। 1818 में तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात् मराठा शक्ति के पतन से मध्यभारत में ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों – भू-राजस्व व्यवस्था, वन विभाग का गठन, कुटीर उद्योगों का विनाश, व्यापारिक शोषण – ने मध्यभारत के किसानों, वनवासियों एवं दस्तकारों को असीम कष्ट में डाल दिया। यही आर्थिक शोषण उपनिवेशवाद-विरोधी चेतना का बीज बना और आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का आधार तैयार हुआ।

4.2 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और मध्यभारत

सन् 1857 का विद्रोह मध्यभारत में एक व्यापक और प्रचण्ड स्वरूप धारण कर चुका था। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इस क्रांति का सबसे प्रतापी प्रतीक बनीं। 23 मार्च 1858 को जब ब्रिटिश सेना ने झाँसी पर आक्रमण किया, तब रानी लक्ष्मीबाई ने अद्भुत वीरता के साथ उसका प्रतिरोध किया। अंततः ग्वालियर के निकट कोटा की सराय में 17 जून 1858 को वे वीरगति को प्राप्त हुईं, परंतु उनकी शौर्यगाथा चिरकाल के लिए राष्ट्रीय इतिहास की धरोहर बन गई।

तात्या टोपे ने मध्यभारत में ब्रिटिश सेना के विरुद्ध छापामार युद्ध की एक नई रणनीति अपनाई। उन्होंने सागर, नर्मदा घाटी, बालाघाट, मण्डला एवं जबलपुर क्षेत्रों में ब्रिटिश फौज को छकाते हुए गुरिल्ला युद्ध जारी रखा।

अप्रैल 1859 में उनके एक विश्वासघाती सहयोगी मानसिंह ने उन्हें गिरफ्तार करा दिया और 18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में उन्हें फाँसी दी गई। नाना साहब पेशवा के भतीजे राव साहब भी ग्वालियर में सक्रिय थे।

1857 के विद्रोह में गोंड राजाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय रही। मण्डला के गोंड राजा शंकर शाह एवं उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने ब्रिटिश राज के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका। उन्होंने गोंड समाज को संगठित करने का प्रयास किया और एक ओजस्वी कविता द्वारा अपने अनुयायियों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया। 18 सितंबर 1858 को अंग्रेजों ने उन्हें बंदी बनाकर जबलपुर में तोप के मुँह से उड़ा दिया। सागर जिले में बहादुर सिंह, सीहोर में अनेक सैनिकों ने विद्रोह किया। इंदौर में होल्कर वंश के कुछ सिपाहियों ने भी ब्रिटिश प्रशासन को चुनौती देने का प्रयास किया। इस प्रकार 1857 की क्रांति ने मध्यभारत में एक ऐसी राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण किया जो आगामी नब्बे वर्षों तक फलती-फूलती रही।

4.3 राष्ट्रीय चेतना का उदय: 1885-1905

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् मध्यभारत में भी राजनीतिक चेतना का विकास होने लगा। नागपुर (जो तब सेंट्रल प्रोविंस की राजधानी था) एवं जबलपुर इस राजनीतिक जागरण के प्रमुख केन्द्र बने। बाल गंगाधर तिलक के विचारों का मध्यभारत के शिक्षित युवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। गणेश उत्सव एवं शिवाजी उत्सव जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार हुआ।

इसी काल में मध्यभारत में समाचार पत्रों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। हिन्दी एवं मराठी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं ने जनचेतना जागृत करने में अग्रणी भूमिका निभाई। माखनलाल चतुर्वेदी (जो बाद में 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रसिद्ध हुए) ने 'प्रभा' एवं 'कर्मवीर' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से जनजागरण का कार्य किया। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' आज भी राष्ट्रभक्ति की अमर रचनाओं में गिनी जाती है।

4.4 स्वदेशी आन्दोलन एवं बंग-भंग विरोध: 1905-1911

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन के विरुद्ध आरम्भ हुए स्वदेशी आन्दोलन की लहर मध्यभारत तक भी पहुँची। जबलपुर, नागपुर, रायपुर, सागर एवं होशंगाबाद में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की घटनाएँ हुईं।

विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं वकीलों ने इस आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए जनजागरण सभाओं का आयोजन किया गया।

इस काल में चरमपंथी राष्ट्रवाद का प्रभाव भी मध्यभारत में दिखने लगा। बाल गंगाधर तिलक की विचारधारा से प्रेरित युवाओं ने गुप्त समितियाँ स्थापित कीं। लोकमान्य तिलक के 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा' के घोष ने मध्यभारत के युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया।

4.5 गाँधी युग और मध्यप्रदेश: 1919-1930

महात्मा गाँधी के राजनीतिक परिदृश्य पर उभरने के साथ ही मध्यभारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा और ऊर्जा मिली। रॉलेट एक्ट (1919) के विरोध में सम्पूर्ण भारत के साथ मध्यभारत में भी हड़तालें एवं प्रदर्शन हुए। जलियाँवाला बाग नरसंहार ने मध्यभारत के जन-मानस को झकझोर कर रख दिया।

1920-22 के असहयोग आन्दोलन में मध्यभारत की व्यापक सहभागिता रही। नागपुर में 1920 में कांग्रेस के अधिवेशन का आयोजन हुआ जिसमें गाँधी जी की असहयोग की नीति को औपचारिक स्वीकृति प्रदान की गई। इस अधिवेशन में बड़ी संख्या में मध्यभारत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विद्यालयों, न्यायालयों एवं सरकारी कार्यालयों के बहिष्कार का आह्वान किया गया। नागपुर, जबलपुर, ग्वालियर, इंदौर एवं रायपुर में इस आन्दोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा।

इसी काल में माखनलाल चतुर्वेदी को उनकी देशभक्तिपूर्ण लेखनी के कारण ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार किया। जेल में रहते हुए उन्होंने अपनी अमर काव्य-रचनाएँ लिखीं जो आज भी हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध मध्यभारत में भी व्यापक प्रदर्शन हुए। 'साइमन गो बैक' के नारों के साथ जुलूस निकाले गए। 1929 में लाहौर कांग्रेस में 'पूर्ण स्वराज्य' का संकल्प लेने के पश्चात् मध्यभारत में भी 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वराज्य दिवस के रूप में मनाया गया। नागपुर, जबलपुर, इंदौर, रायपुर, होशंगाबाद आदि स्थानों पर तिरंगा फहराया गया।

4.6 सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं नमक सत्याग्रह: 1930-1934

12 मार्च 1930 को आरम्भ हुई गाँधी जी की दाण्डी यात्रा और नमक कानून तोड़ने की घटना ने सम्पूर्ण देश को उद्वेलित कर दिया। मध्यभारत में भी नमक सत्याग्रह के रूप में इस आन्दोलन की प्रतिध्वनि सुनाई दी। होशंगाबाद में नर्मदा नदी के तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ा गया। जबलपुर में भी सत्याग्रह आन्दोलन की प्रमुख गतिविधियाँ हुईं।

सेठ गोविन्ददास, द्वारकाप्रसाद मिश्र, रविशंकर शुक्ल, पण्डित सुन्दरलाल, महिला नेत्री दुर्गावती देवी जैसे नेताओं ने मध्यभारत में इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। छत्तीसगढ़ में पण्डित रामदयाल तिवारी तथा महंत लक्ष्मीनारायण दास ने सत्याग्रह का संचालन किया। जंगल कानूनों के विरुद्ध वन सत्याग्रह भी आरम्भ हुआ जिसमें छत्तीसगढ़, बैतूल, होशंगाबाद एवं बालाघाट के वनवासियों ने भाग लिया। वन सत्याग्रह में वनों से लकड़ी काटकर एवं वन भूमि जोतकर ब्रिटिश वन कानूनों को चुनौती दी गई।

इस आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही। जबलपुर, नागपुर, सागर, दमोह, रायपुर एवं बिलासपुर में महिलाओं ने शराब की दुकानों पर धरना दिया, पिकेटिंग की और गिरफ्तारी दी। मध्यभारत की महिलाओं की यह सक्रियता स्वतंत्रता संग्राम में उनकी ऐतिहासिक भूमिका का प्रमाण है।

4.7 भारत छोड़ो आन्दोलन: 1942

9 अगस्त 1942 को आरम्भ हुए 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में मध्यभारत की जनता ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। 'करो या मरो' के गाँधी जी के आह्वान पर मध्यभारत के शहर-गाँव में विद्रोह की लहर दौड़ गई। जबलपुर, सागर, नागपुर, रायपुर, इंदौर, उज्जैन, खण्डवा, बैतूल आदि नगरों में सरकारी भवनों पर आक्रमण, रेल-पटरियाँ उखाड़ना, टेलीफोन के तार काटना तथा थानों पर हमले जैसी घटनाएँ हुईं।

ग्वालियर में क्रांतिकारियों ने रेल-संचालन को ठप किया। छत्तीसगढ़ के धमतरी, राजनांदगाँव एवं दुर्ग क्षेत्र में किसानों एवं मजदूरों ने बड़े पैमाने पर आन्दोलन में भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मध्यभारत में हजारों लोगों को जेल में डाला गया। ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह को कुचलने के लिए लाठीचार्ज, गोलीबारी एवं सामूहिक जुर्माने की नीति अपनाई।

इस आन्दोलन में भूमिगत क्रांतिकारियों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। सागर जिले में अर्जुनलाल सेठी, जबलपुर में कृष्णदत्त जोशी एवं अन्य क्रांतिकारियों ने भूमिगत रहकर आन्दोलन का संचालन जारी रखा। विद्यार्थियों ने शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया और खुलकर आन्दोलन में कूद पड़े।

4.8 जनजातीय विद्रोह और स्वतंत्रता संघर्ष

मध्यभारत में जनजातीय समुदायों का स्वतंत्रता संघर्ष एक विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व रखता है। ये विद्रोह एक साथ उपनिवेशवाद-विरोधी, जमींदारी-विरोधी और वन-नीति-विरोधी चरित्र लिए हुए थे।

गोंड विद्रोह के अंतर्गत 1857 के पश्चात् भी गोंड राजा एवं जनता समय-समय पर विद्रोह करते रहे। मण्डला, बालाघाट, सिवनी एवं डिण्डोरी के गोंड किसान वन कानूनों, लगान-वृद्धि एवं बेगार प्रथा के विरुद्ध उठ खड़े हुए। उनके संघर्ष में 'जल, जंगल, जमीन' का भाव केन्द्रीय था।

भील विद्रोहों की परम्परा मध्यभारत में अत्यंत समृद्ध रही। पश्चिमी मध्यभारत (झाबुआ, अलीराजपुर, खरगोन) के भील नायकों ने ब्रिटिश शोषण के विरुद्ध अनेक बार संघर्ष किया। विसाजी-नायक एवं अन्य भील वीरों की गाथाएँ लोक-स्मृति में आज भी जीवित हैं। बैगा जनजाति ने भी बालाघाट और मण्डला में ब्रिटिश वन-नीतियों के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध किया। कोरकू एवं कोल जनजातियों ने होशंगाबाद तथा नर्मदा घाटी में विद्रोह के द्वारा अपनी स्वायत्तता की रक्षा करने का प्रयास किया।

4.9 महिलाओं की भूमिका

मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी सीमित नहीं थी; वे इस संघर्ष की अग्रिम पंक्ति में खड़ी थीं। रानी लक्ष्मीबाई तो इस वीरांगना-परम्परा की आदि-प्रतीक हैं ही, इनके अतिरिक्त अनेक साहसी महिलाओं ने बीसवीं शताब्दी के आन्दोलनों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जमनाबाई (जबलपुर) ने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और कई बार जेल गईं। सुभद्राकुमारी चौहान — जिनकी अमर रचना 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' ने लाखों भारतीयों को प्रेरित किया — जबलपुर में रहकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहीं और 1921 के असहयोग आन्दोलन में गिरफ्तारी देने वाली प्रथम

महिला सत्याग्रही बनीं। नागपुर में कमलाबाई गोखले, इंदौर में बाई साहेब लक्ष्मीबाई जैसी अनेक महिला नेत्रियों ने स्थानीय आन्दोलन को गति दी। ग्रामीण एवं जनजातीय महिलाओं ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में ब्रिटिश अधिकारियों एवं जमींदारों के अत्याचारों का विरोध किया।

4.10 प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968): 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात माखनलाल जी खण्डवा के थे। उन्होंने 'कर्मवीर' एवं 'प्रभा' पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए जनजागरण का कार्य किया। अनेक बार जेल गए और हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की भावना का संचार किया।

रविशंकर शुक्ल (1877-1956): छत्तीसगढ़ के पण्डित रविशंकर शुक्ल ने असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाई। वे मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने।

सेठ गोविन्ददास (1896-1974): जबलपुर के सेठ गोविन्ददास ने स्वतंत्रता संग्राम में आर्थिक एवं राजनीतिक दोनों स्तरों पर योगदान दिया। वे हिन्दी के प्रबल समर्थक भी थे और स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयासों में सक्रिय रहे।

द्वारकाप्रसाद मिश्र (1901-1988): सागर के द्वारकाप्रसाद मिश्र ने आन्दोलनों में भाग लेने के साथ-साथ हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवा भी की। वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।

सुभद्राकुमारी चौहान (1904-1948): नागपुर से जबलपुर आकर बर्सी सुभद्राजी ने स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष भागीदारी की और अपनी कविताओं से राष्ट्रीय चेतना जागृत की। उनकी काव्य-रचनाओं में स्वाधीनता की अदम्य आकांक्षा प्रतिबिम्बित होती है।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन के ऐतिहासिक अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आते हैं:

प्रथम, यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश का स्वतंत्रता संघर्ष 1857 से बहुत पहले आरम्भ हो चुका था। जनजातीय समुदायों के विद्रोह, किसानों के संघर्ष एवं सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में यहाँ उपनिवेशवाद-विरोधी भावना पहले से ही प्रवाहित हो रही थी। 1857 ने इस चेतना को एक व्यापक क्रांतिकारी स्वरूप दिया।

द्वितीय, मध्यभारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख विशेषता यह रही कि यह केवल अभिजात वर्ग या शहरी मध्यम वर्ग तक सीमित नहीं था। किसान, वनवासी, मजदूर, महिलाएँ, जनजातीय नायक — सभी इस संघर्ष में सहभागी रहे। यह जन-आन्दोलन की सच्ची अभिव्यक्ति था।

तृतीय, गाँधी जी के नेतृत्व में मध्यभारत में राष्ट्रीय आन्दोलनों ने नई ऊर्जा एवं व्यापकता प्राप्त की। असहयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आन्दोलनों में यहाँ की जनता ने अद्वितीय उत्साह एवं बलिदान का परिचय दिया।

चतुर्थ, मध्यभारत के साहित्यकार एवं पत्रकार—विशेषतः माखनलाल चतुर्वेदी एवं सुभद्राकुमारी चौहान — ने अपनी लेखनी को स्वतंत्रता का हथियार बनाया। हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद के स्वरो को मुखर करने में उनका अवदान अतुलनीय है।

पंचम, जनजातीय समुदायों के संघर्ष—जो 'जल, जंगल, जमीन' की रक्षा के लिए लड़े—को स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए। ये केवल स्थानीय विद्रोह नहीं थे, बल्कि उपनिवेशवाद के विरुद्ध एक मूलभूत प्रतिरोध था जो आजादी की मुख्यधारा से जुड़ा हुआ था।

षष्ठ, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् मध्यभारत की विभिन्न रियासतों एवं क्षेत्रों का एकीकरण एक जटिल प्रक्रिया थी। 1956 में मध्यप्रदेश के गठन ने इस ऐतिहासिक प्रक्रिया को एक संगठित राजनीतिक स्वरूप दिया।

6. उपसंहार (Epilogue)

मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास वास्तव में त्याग, बलिदान, साहस एवं संकल्प की एक महागाथा है। इस भू-भाग की विविध भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने स्वतंत्रता संघर्ष को एक बहुरंगी एवं बहुस्तरीय स्वरूप दिया। झाँसी की रानी की तलवार से लेकर गाँधी जी के चरखे तक, शंकर शाह की वीरगाथा से

लेकर माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य-पंक्तियों तक—मध्यभारत का संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता के महाआख्यान का एक गौरवशाली अध्याय है।

इस संघर्ष में जिन अनगिनत नाम-अनाम वीरों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया, उनकी स्मृति को जीवित रखना न केवल ऐतिहासिक उत्तरदायित्व है, बल्कि वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत भी है। अनेक स्वतंत्रता सेनानी आज भी इतिहास के पन्नों से बाहर हैं — उनके संघर्षों का दस्तावेजीकरण किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

यह भी उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक मध्यप्रदेश ने देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह संघर्ष की विरासत आज भी यहाँ के जन-जीवन, साहित्य, कला एवं लोक-परम्पराओं में जीवित है। नर्मदा के तट पर, विन्ध्य की पहाड़ियों में, सतपुड़ा के घने वनों में — हर जगह उन अमर सेनानियों की स्मृतियाँ गूँजती हैं जिन्होंने आज की पीढ़ी को एक स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी भारत सौंपा।

इस शोध पत्र का समापन करते हुए हम यह कह सकते हैं कि मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम का व्यापक एवं गहन अध्ययन अभी भी अपेक्षित है। जिला स्तरीय एवं ग्राम स्तरीय अभिलेखों, मौखिक इतिहास, लोक-साहित्य एवं जनजातीय स्मृतियों के आधार पर इस इतिहास को और समृद्ध किया जा सकता है। आशा है कि भविष्य के शोधार्थी इस दिशा में और अन्वेषण करेंगे और मध्यभारत की स्वाधीनता-कथा को उचित ऐतिहासिक स्थान दिलाने में योगदान देंगे।

संदर्भ सूची (References)

1. अग्रवाल, बी. आर. (1971). मध्यप्रदेश का इतिहास. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
2. मिश्र, द्वारकाप्रसाद (1980). जीवन संग्राम. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
3. चतुर्वेदी, माखनलाल (1962). कर्मवीर: चुने हुए लेख. जबलपुर: साहित्य संगम.
4. Bose, Sugata & Jalal, Ayesha (2004). Modern South Asia: History, Culture, Political Economy. New York: Routledge.

5. Pandey, Gyanendra (1988). 'Peasant Revolt and Indian Nationalism' in Guha, Ranajit (ed.), Subaltern Studies I. Delhi: Oxford University Press.
6. Guha, Ranajit (1983). Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India. Delhi: Oxford University Press.
7. सिंह, उमाशंकर (1990). मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी. भोपाल: मध्यप्रदेश राज्य अभिलेखागार.
8. Gordon, Stewart (1993). The Marathas 1600-1818. Cambridge: Cambridge University Press.
9. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1920). नागपुर अधिवेशन: कार्यवाही एवं प्रस्ताव. मुम्बई: कांग्रेस कार्यालय.
10. Hardiman, David (1987). The Coming of the Devi: Adivasi Assertion in Western India. Delhi: Oxford University Press.
11. Natarajan, J. (1955). History of Indian Journalism. New Delhi: Publications Division.
12. मध्यप्रदेश राज्य अभिलेखागार (1985). 1857 का स्वतंत्रता संग्राम: मध्यभारत का संदर्भ. भोपाल: राज्य शासन प्रकाशन.
13. Sarkar, Sumit (1983). Modern India 1885-1947. Madras: Macmillan India.
14. Trivedi, Lisa (2007). Clothing Gandhi's Nation: Homespun and Modern India. Bloomington: Indiana University Press.
15. शुक्ल, रविशंकर (1954). मेरी आत्मकथा. रायपुर: छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य परिषद.
16. Bates, Crispin (ed.) (1992). Community, Empire and Migration: South Asians in Diaspora. London: Palgrave Macmillan.
17. तिवारी, रामस्वरूप (2001). मध्यप्रदेश का राजनीतिक इतिहास: 1920-1947. जबलपुर: मध्यप्रदेश इतिहास परिषद.
18. Chandra, Bipan (2009). India's Struggle for Independence. New Delhi: Penguin Books India.

19. Kumar, Ravinder (1984). Essays in the Social History of Modern India. Delhi: Oxford University Press.

20. मध्यप्रदेश शासन (2002). मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी: संस्मरण एवं जीवन-वृत्त. भोपाल: संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन.

